भूमिका

१

—※—

जानना चाहिये कि संपूर्ण संसार का कि जिसका ज्ञान हमलोगों को दशइन्द्रिय द्वारा होता है कर्त्तापर-ब्रह्म परमेश्वर है और उसीने अपनी दयालुता पूर्व्वक बहुत से सगुण अवतार धारण कर अनेक प्रकार के चरित्र किये हैं कि जिसमें निर्बुद्धीमनुष्य उन चरित्रों का कीर्त्तन और गान करके अपने अपने मनोवांछित को प्राप्त होवैं अब यहींपर इसबातका भी लिखना उचित है कि परब्रह्म परमेश्वर के ध्यान औ स्मरण औ उनके चरित्रों का कीर्त्तन औगान किसीरीतिके अनुसार करना उचित हैकि जिसमें जगत्कर्त्ताकी प्रसन्नता शीघ्र ही हो काहेते कि मनुष्यों ने अनेक अनेक रीति परमेश्वरके ध्यान औ स्मरण की अपनी बुद्धि के अनुसार नियत कीहैं और इस कारणसे बुद्धिको कहीं स्थिरता नहीं होती कभी कुछचित्तमें आताहै और कभी कुछ यद्यपि मनुष्योंने अनेक रीति नियतकी हैं और एकरीति से दूसरी रीतिमें साधारण दृष्टिसे भेद मालूम होताहै तथापिसब रीतों का मूलवेद हैऔर सबरीतें परमेश्वर के ध्यान औ स्मरणकी जो वेदानकूल नियत कीगई हैं

उचित और माननीय हैं—सारांश यह है कि वेदानुकूल रीतोंमेंसे जो जिसको सुगम मालूम हो उसीपर दृढ़होके तत्परहो और परमेश्वर का ध्यान स्मरणभाव भक्ति कर अपने मनोभीष्ट को प्राप्त हो काहेते कि इस संसार में मनुष्य तन पानेका यहीफल है कि श्रीयशोदानन्द आनन्द कन्दके चरणारविन्द का अनुरागी हो कि जिसमें उनकी कृपाते इहलौकिक और पारलौकिक सुखोंका भागीहो परमेश्वर के रूप निरूपणमें बहुतही श्रुति हैं—और उनमें से एकयह श्रुतिहै—(रसोवैसः)—तात्पर्य्य इसका यह है कि परमेश्वर नवरस मय है इससे मालूम हुआ कि इन नवोंरसमें कि जिसका वर्णन साहित्यशास्त्र मेंहै चित्त लगाना मानोपरमेश्वरमें चित्त देना है॥ और इन नवों रसमें परमेश्वर के चरित्रोंका वर्णन करना मानो परमेश्वर का ध्यान उन्हीं के रूप में करना है—अब एकबात यहहै कि नवों रसछंद और वार्त्तिक दोनोंमें वर्णे जासक्ते हैंतो परमेश्वर के चरित्रों का वर्णन किसमें अत्यन्त सुखप्रद होगा—और दूसरे यह कि सब रसोंमें कौनसा रस भावभक्ति करने में उचित और सुन्दर है॥ दूसरी बात तो प्रत्यक्ष है—सब महा कवीश्वरों की यही सम्मति है कि शृंगाररस सब रसोंमें प्रधान है और सब रसोंमें श्रेष्ठ है और पहिली बात किंचित् विचार करने के योग्य है—यद्यपि सबबातें निष्ठाही पै स्थीयमान हैं चाहै परमेश्वर के चरित्रों को वार्त्तिक में वा छंदोबद्ध में वर्णन करके अपनी जिह्वा

पवित्र करै तथापि शिष्टाचार देखना उचितहै—जहांतक देखा जाता है सब महात्मा लोगोंने छंदहीमें बहुधा परमेश्वर के चरित्रों को वर्णन कियाहै अष्टादश पुराण और उपपुराणमहाभारत इत्यादि इतिहासश्रुतिस्मृति और स्तोत्र सब छन्दोबद्ध हैं—और अब के महात्माओं ने भी यथा श्रीगोस्वामी तुलसी दासजी और सूरदास जीने परमेश्वर के चरित्र छंदहीमें वर्णन किये हैं—इससे मालूम होताहै कि परमेश्वरका गुणानुवाद छंदमेंकरना प्रयोजन से खाली नहीं—और यह बात प्रत्यक्षहीहै कि मनचंचल इसका स्थिर रहना अत्यंत कठिनहै जबयोंही परमेश्वर का नाम लेने लगो जिह्वा से तो नाम निकलता जाताहै परचित्त अन्त चलायमान होजाताहै—और छन्दकी रचना में चित्त अनत डुलही नहीं सक्ता इनसब बातोंको सोच विचार के मेरेभी चित्तमें यही भासमान हुआ कि रसिक शिरोमणि श्रीकृष्णचन्द्र और श्रीराधाजू के परम पावन चरित्र औ लीला छन्दों में कुछवर्णन करके मैं भी अपने अभीष्टको प्राप्तहूं हमारे कुलकी परम्परा भी कुछ इस बातके चित्तमें आनेकी साधक हुई और इसवास्ते थोड़ाहाल लिखना उचित हुआ मेरे कुलके हालात प्रथम तो विदितही हैं दूसरे तफ़सीलवार हालात स्लीमन्सजरनी आफ औध अर्थात् सुलेमन् साहेब की निर्मित अवध इतिहास वो रपोर्ट कारनेगी साहेब बहादुर बन्दोबस्त सरसरी ज़िलाफ़ैज़ाबाद औ तवारीख मेरी बनाई हुई जो दाखिल बन्दोवस्त कानूनी

ज़िला फ़ैज़ाबाद है उससे प्रकट होसक्ता है और इसी हेतुसे सर महाराजा मानसिंह बहादुर के सीयसआईने अपने हालात में शृंगारबत्तीसी नाम ग्रंथ में केवल यही दोहा लिखे हैं ॥ दोहा ॥

अवधईश मंडनभुवन दरशनसिंह नरेश ।
जाकेयशसोंश्वेतभा दिशिदिशिदेशविदेश १ ॥
ताकेसुतअतिअल्पमति मानसिंहद्विजदेव ।
कियशृंगारबत्तीसिकाहरिलीलापरभेव २ ॥

महाराज दर्शनसिंह बहादुरशाकद्वीपियोंमेंएक अवतारक हुये उनका प्रताप तमाम सूबे अवधमें ज़ाहिरहै उक्तमहाराजके प्रथम पुत्र राजारामाधीनसिंह दूजेराजा रघुवरदयालसिंह बहादुर तीजे महाराजा सरमानसिंह बहादुरक़ायमजंगके,सी,एस,आई० हुयेइनमहाराजने प्रथमतोशृंगारलतिकानामग्रंथ श्रीराधामाधवके चरित्रमें बनाय मुद्रित कराया था द्वितीय शृंगारबत्तीसी नाम अति उत्तम श्रीराधा कृष्ण संबंधी रचा—और इसी ग्रन्थको मैंने सन् १८७७ ईसवीमें मुन्शीनवलकिशोर साहबके यन्त्रालय लखनऊमें छपवायाथा येदोनोंग्रन्थ अति उत्तम और अवलोकन करिबेके योग्यहैं ॥ यद्यपि उक्त महाराजके काव्यको चमत्कार इन दोनोंग्रन्थों से मालूम हो सक्ता है तथापि मैं दो कवित्त बतौर नमूनः के उक्त महाराजके लिखता हूं ॥

सवैया ॥

कौनको आगहरै हलयों इग कानन लागि मतोबहैं

बुझन। त्यों कछु आपुसहीमें उरोज कसाकसी कैकैबढ़े वढ़ि जूझन॥ ऐसे दुराज दुहूंवयके सबहीको लग्योअनचोंचँद सूझन। लूटनलागी प्रभा कटिके बटिकेश छवान सो लाग अरूझन १ लखि ठोढ़ी रसाल रसालन्न को फर पोरीपरोलरको तो कहा। द्विजदेवजू आछे कटाक्ष चितै छन जोन्ह हियो थरको तौ कहा॥ द्युति दंतन की एक बारलखै उरदाड़िमको दरको तो कहा। अंगअंग कोऐसीप्रभा अवलोकि अनंग फिरै फरको तौकहा २॥

राजा रामाधीनसिंह साहेबको संस्कृतमें वाकिफ़ियत थी भाषा काव्यकी तरफ़ ध्यानकम रहताथा प्रथमपुत्र विश्वनाथ सिंह दूजे राजाकाशीनाथ सिंह तीजे लाल शंकर नाथसिंह इन साहबोंको भी काव्यकी तरफ़ कम ख़्यालहै॥

राजा रघुबरदयालसिंह साहेब बहादुरके हालात सब उन तवारीख़ोंसे ज़ाहिर होसक्ते हैं—परमेश्वर के निमित्त श्रीअयोध्याजी में गोसारघाट पे मन्दिर रचाहै और और बहुतसे पुण्यके काम किये हैं—इन महाराज को भी काव्यकी तरफ़ कम तवज्जुथी—प्रथमपुत्र राजा रामनाथसिंह साहेबकि फ़ारसी संस्कृत भाषा में अति निपुण हैं बहुतसी कविताई करी है—दो कवित्त बतौर नमूना के लिखे जातेहैं॥

कवित्त॥

केशोंकारिकारी मनहारीहोत प्यारीप्यारी बातको कुमारीसुखकारी कलकारीहै। नरदेवकारीकारी बंदिश

डेरारीघटाभूमिपै सुरंगइन्दुनारीकीपत्यारीहै ॥ बल्लरी पत्यारी पति धारी डारी भूमिडारी तैसई तमाल डारी न्यारीछबिधारीहै । कारी मुदकारीनिशि वायुशीतकारी तामैंयारी हरियारी सोहिं भावती तिहारीहै १ साजि चारु कारो नव बसन सुगोरे वपु नर देव सोहै जिमि संपाघटा कारीमैं । भानुतनयाके तीर खोलेकचधोवती-ती सुंदरि सलोनी वह रतिकी तयारीमैं ॥ आइ श्याम ताहीछन दीख्यो है अनोखी छबि कामिनी उठायो जब कच पाणिप्यारीमैं । अम्बुज उदर फारिप्रगट्योतमीश बिम्ब कम्बुपै कुरंग युत यामिनी अँध्यारीमैं २ ॥

दूजेराजा लक्ष्मीनाथ सिंहसाहेब फ़ारसी संस्कृत भाषामें बड़ेयोग्यहैं और बहुत सी कवितांई करीहैं दो कवित्त्व बतौर नमूनाके इहांपर लिखताहूं ॥

सवैया ॥

मंजु सलोनीओ बारी लताहरियारी ककूपतियानि लईहै । पुंगसे वैफल श्रीफल की सुखमा लहिराजतराग भईहै ॥ बातनतेंअबहोत प्रफुल्लितपास चहूंअलि औलि छईहै । हो बनमाली उताली चलो तित बंजुल कुंजन प्यारी नईहै १ ॥

कवित्त्व ॥

बर बरसत बारिबारिद बलित व्योमबल्लरी बिता-ननको छोर छिति छ्वै रह्यो । केकीकीर कोककलकोक कारिकासी कहैंकलित कदम्ब मकरन्द बुन्द ब्वैरह्यो ॥ कुसुमित सारस सरस सरसर सोहै सारस सरससह-

रस स्वरहृवैरह्यो । चलु प्राण प्यारी लखुकुंजछविवारी ब्रज बनिता बिहारी गिरिधारी मग ज्वैरह्यो २ ॥

तीसरे लालतारा नाथ सिंह साहेबने प्रथमतः तो फ़ारसी औ संस्कृत पढ़ो—उसीके पीछे काव्य में शौक़ हुआ कवित्त उनका यह है ॥

कवित्त ॥

साजीपीत सारी लाल अंचल किनारीमांग मोतिन सँवारी वृषभानुकी दुलारी है । चलति मरालगति बेंदी भाल छाई अति मानो इन्दु मध्यसूर सुखमा सँवारीहै । कहै कवि श्रीगोबिंद गोपिनके वृन्दनमें राजैं मनुतार-कन बीचहिमकारीहै । नयननि चकोरतैंनिहारत यमुन तट गोपसंग आजु कहुंआवैं गिरिधारी है १ ॥

चौथे त्रिलोकीनाथ सिंह याने ग्रंथकर्त्ता ने प्रथमतो अँगरेज़ी फ़ारसी और साथही संस्कृत पढ़ो अब थोरे दिनोंसे भाषाछन्द जोड़नेका शौक़ हुआहै पहिले तोचा-णक्यनीति दर्पणको ग्यारहअध्याय पर्य्यंतभाषादोहा कवित्तोंमें उल्थाकिया कि जोअभीनहींछापागया दूजे यहो भुवनेशभूषण नाम ग्रंथ श्रीराधा माधव केचरित्र विषयमें बनाय श्रीराधा माधव जूके गुणानुवाद किये ॥

—※—

प्रकट हो

—※—

कि यह मेरीकाव्य केवल ईश्वर निमित्तहै इसलिये मुझको इस बातके लिखने में कुछ ताम्मुल नहीं है कि मुझको न गणागण के दोषोंका कुछ डरहै और न और काव्यके दोषों की परवाह तथापि कवि जनों पै हमारी यही प्रार्थना है कि जो कुछ न बना हो उसे कृपायुक्त सुधारि देवैं अनबने का बनाय देना अच्छे लोगों के स्वाभाविक गुण हैं ॥

मेरानाम त्रिलोकीनाथसिंह सवैया छंदमें नहीं आता था इसलिये इसीनामके अर्थके अनुकूल सब कवित्वोंमें भुवनेश नाम रखदिया है ॥

एक उदधिबद्ध चित्रभी लिखदिया गयाहै ॥

इति भूमिका वर्णनम् ॥

श्रीगणेशायनमः ॥

भुवनेश भूषण ॥

दोहा ॥

मूषकवाहन गजवदन शम्भु सुवन गणराय ॥
ध्यावत पंकजचरणतुव मनमलिन्द हरषाय १
एक रदन करिवर वदन हर्षसदन गुणधाम ॥
मदनकदननन्दनतुमहिं ध्याइ चहौंनिजकाम २

सोरठा ॥

अम्बुज पद शिरनाय राधा माधवको सुयश ॥
वरणतहोहु सहाय जयजयजय जननीजगत ३

षट्पदः ॥

धरि हरि नटवर रूप राधिका संग विराजत । मन मलिन्द मद मत्त निकट अरविन्द न भ्राजत ॥ लहि समीर फहरात पीतपट अंगसवाँरत । छकिरहे नयनच-कोर दुहुन मुख चन्द निहारत ॥ भुवनेश बिनोद कला निरखि श्रीराधा ब्रजचंदबहु । विस्तीरण जगमें करतयश गुनि गुनि मन आनंद लहु ४ ॥

सवैया ॥

समता भूमतामें परीहीरहैं अवलोकिछटा उननयनन

की। सरसात शशीद्युति सुंदरताहि लहैं कबि लाजि स-रोजनकी। भुवनेश सबै बिधि येतो सुरंग कुरंग गहैं सरि क्यों इनकी। इमपानिपको लहि मीनहुके गण आश करैं निज जीवनकी ५ लोचन लालभये हैं कहांयह आभापरी तुम्हरे अधरानकी। अंजन रेख कपोलनपै प्रति बिम्ब है नयनमलिंदसमानकी। नाहकक्यों बकबाद करो भुवनेश जू दागधरे बिछुवानकी। आनि लगायो तुम्हैं उरसों यह रेखपरी तुम्हर मुकुतानकी ६ ॥

कवित्व ॥

गतिते गयंदजीति साजिदृग अंजनसों खंजरीटजीति लीन्हीं शोभासुख मानिकै। बानीते सुबीनबर बाहुत स-रोजनाल चंदमुख देखिकंज सकुच्यो गलानिकै। सुन्दर सुरंगसुभ्र कंचुकी उरोजनपै साजी भुवनेशपीय आगमन जानिकै। मानो रतिरानी हरषानी युगको कनि को बां-धिराखी जालदार पींजरेमों आनिकै ७ आय नहिं कंत होन चाहे रजनीको अंत शोचैति सयानी चंदमंदहि पि-छानिकै। उससि उसासु आशु आंशुमोचि लोचनते तो-तनमें छायोदुख दीरघ गलानिकै। सकुचि सहेलिनिसों सोई भुवनेश इमि ढांपिलीन्हो अंगअंगसारीसुभ्रतानिकै। मानो करिहरि कोककीरै मृग इन्दु अहि बांधि राख्यो जालदार पींजरेमों आनिकै ८ ॥

सवैया ॥

करकंजके बारपै राजि रहे छहरी छितिलौं छुटिकै अलकैं। अँगिराति जम्हाति भलीबिधिसों अध नयननि-

आनिपरी पलकैं ॥ भुवनेशजू भाषे बनै न कछू मुखमंजुल अम्बुजसे झलकैं । मनमोहननयन मलिन्दनसों रसलंत न क्यों कढ़िहैं फलकैं ६ यह काह भयोनहिं जानि परै कुच पै कसि कंचुकिया दरकैं । भुवनेश जू त्योंहीं लचै करिहां सब भांति न घांघरियां सरकैं । कनखैयन ताकतिहै तबहूं उन सौतिन की अँखियां करकैं । घरकैं छतियां छरकैं कच कुंचित देखति हौं देहियां फरकैं १० बातें अनेक अनेक रचीं भुवनेश बये बहु बीज सनेहको । पैवे जमैं किमि ऊसरमैं तबहारि चलेकोहिकै हरिगेहको । ताहूपै ये मनमोहनह्वै पिघले सजनी न रहेगहे तेहको । हैं अकुलात पखेरू अपक्ष ज्यों चाहैं तज्यो अब पींजरो देहको ११ देखत क्योंन अहो भुवनेश जू मीन रहैं जलके अभिलाषे । स्वातीके बुन्दनिके लहिबेको रहैं नितचातकहू रुखराखे । उद्धव लाज कछू न गहो समुझो न कहा अब होतहै भाषे । धीरधरैं किमि नयनचकोर बिनामुख चन्द छटा हरिचाखे १२ शुभसाजि सिंगार सबै बिधिसों तबतो बहुभांति हुती उमगी । सियरानीसां यों अवलोकि परै जनुकामके हाथगईहै ठगी । भुवनेश छुटे तियकेश छवान लौं यों मनमें उपमानें जगी । तन पानिपपे कैसे बारकै व्यालिनि चम्पक पै लसि प्रेमपगी १३ बूझतुहौ कहा वाको दशा भुवनेश जू बात वृथा बहि जायगी । सांची कहे पतियाहु नहीं नहिं काची कछू हमसों कहि जायगी । आश नहीं बचिबेकी अबै पर प्यारी जऊ रहवे रहि जायगी । वौष बिसे बन फूले पलाशन देखि ...

रनसों दहि जायगी १४ सुनरी सजनी करिहैं वे कहा
अपनीसो सबैजुपैकै रहैंगी। भुवनेश जू सांची कहौं तु-
मसों बतियां छतियां निजधै रहैंगी। मिलिहैं हम जाय
अबै उनसों तबतो अपनो मुखलै रहैंगी। अबबीश बिसे
यहो होनो अहै करमींजि कपोलन दै रहैंगी १५ चाव
सबैबिधिसों करिकै मुखराखि अधोगति सीरहि जायँगी।
त्यों भुवनेश जू सांचो कहौं उनकी बतियां सबही बहि
जायँगी। पीतम तेअपने मिलिबेकोभला उनके डरतेनहिं
जायँगी। प्रीतिकी रीति बिलोकि बिलोकि सुवै दहते
दहतै दहि जायँगी १६ हमसों करि नाहक रारिनितै
तुम आपुहि आपु दहा करोगी। भुवनेश नहीं परवाह
हमें इनबातनमें जो रहा करोगी। यह जानिपरी हमको
अबतो अपनी करतूति डहा करोगी। तुम बादकी बातें
कहा करोगी तो बताओ हमारो कहा करोगी १७ उन-
सों कछु बातें करी जबते तबहींते अहैं बिषबोने लगीं।
नहिं जानि परै इन्हें लाभ कहा फुसकात रहैं कोनकोने
लगीं। भुवनेश न मानति हैं तनिको डर बातमें बात
मिलोने लगीं। मुख खोलेलगीं दुखरोने लगीं अब चावें
चहूंदिशि होनेलगीं १८ चढ़ि चौकमें चन्दन की चउकी
चितचायन सों कहुं रूपरचै। भुवनेश कहूं पग पायल
डारत नूपुर झंझनकार मचै। हुलसै बिलसै कहुं आनँद
में कहुं लानी लवंग लतासी लचे। नँदलाल मिलकै
लिये करें ख्याल बजाइकै ताल सताल नचै १६ सखि
काह कहों उनके हित में सबही कुलकी कुलकानि

तजी। भुवनेश भई बृजमें बदनाम कियो पै वही जो करी मरजी। सखियानि के बैनन कानकिये जो अनेक निवार हमें बरजी। मनमें नहिं आई तऊ उनके हम कौन कहो अब स्वांग सजी २० घहरानी घने घनघोर घटा। करि शोर उठे बहु मोरअटा। घनश्यामैं मिलै तियताही समय चली दामिनी सी फहरै दुपटा। वाके नयन घने घने घालैं कटाक्ष भनै भुवनेश सुकौन छटा। जनु बिश्व फते करिबेके हितै फरकावै मनोभव भूपपटा २१॥

कवित्त॥

चितय चितय चहूं चपल चपलचोर वे चातुर चकृत चौंकि चमकिचमकि उठै। औझकि उझकि झुकि झझकि झझकि झुमि झिल्ली झनकारनसों झझकि झझकि उठै। भुवनेश भरत दरारैं दबे दादुर न देखिदुरि देखि देह दमकि दमकि उठै। बरही बलाकनि बिलोकि बद्दलनि बर बनिता वदन विधु बमकि बमकि उठै २२ चोथते चकोरैं चितचारैं चहु ओरैं चेति चिन्तामें चकितचित च-मकि चमकि जात। झुकि झझकोरि झोर झटित झरोखे झांकि झारि झार झोरनसों झमकि झमकि जात। भुव-नेश लोनेलोने लोचदार लोचननि ललित लतान लखि लमकि लमकि जात। तपित तरुणितिय तीखेतन ता-पनिमें ताकि ताकि तारापति तमकि तमकि जात २३ कसकैं करेजेपै कलापी कछू कीन्होकरैं करिकै कलापैं कछू काहूसों न कहि जात। सीरे शुभ सुरभि समीर सरसान लागे सहज स्वभायन शरीरसों न सहिजात।

भुवनेश भरी भरी दीपति दुचंदन सों दामिनी दमाकें दुरी देखि देह दहिजात। बरषि बरषि बहि जाते बर बादर पै बिरह ब्यथारी बैरी बावरी न बहिजात २४॥

सवैया॥

रूप रच्यो हरि राधिका को उनहूं हरि रूप रच्यो छवि छावत। गावत तान तरंग दुहूं दुहूं भाव बताय दुहूँन रिझावत। त्यों भुवनेश दुहूंन के नयन दुहूंन के आनन पै टक लावत। छाइरही छवि वैसिहिरी सुनीजो हुती चन्दचकोर कहावत २५ साजे अभूषण श्वेत सबै अंगअंगनमें रस मैनको भीजत। छाइरही कछुयोंमुखकी छबिहै छबिहीन छपाकर छीजत। त्यों भुवनेशजू ओरो छटा कहि जाय सुक्यों मनमैनका भींजत। दामिनीसी द्युति दै रहीहै चलि क्यों घनश्याम न अङ्कमें लीजत२६ भोग बिलासनमें जे सदारहीं आय तिन्हें तुम योग सिखावत। देह सुरंगन पै सजिबे कहूं कैसे कुरंगकी छाल बतावत। त्यों भुवनेश अनोखी अनोखी सु बातें बनाय कहा फल पावत। योग अयोग बिचारि सकोनहिं उद्धव कौने प्रबीण कहावत २७ सीरो समीर उशीरके मन्दिर तीर कलिन्दसुताके डुलावति। पांतिन पांतिन पातघने जलजातन के तुम आनि बिछावति। चन्दन औ घनसार घिसो भुवनेश वृथाही हिये दुखलावति। काहेन तू मिलिकै ब्रजचंदसों बेगि सबै उरताप बुझावति २८ हम जानतीकी न निबाहहिंगे तवप्रेमके फन्दमें क्यों परती भुवनेशजू त्यों बदनामी इती अपने शिरपै हमक्यों धर

ती । उनकी करतूतिन को लखिकै अब काहे उसासन को भरती । सखियानि के संग निशंक भई ब्रज बीथिन माहींखेला करती २६ दृग कानन लौं अवलोकि अली मृग खंजन जाइबसे हठि कानन । अरबिन्दन वृन्दघने सकुचैं निरखैं जो सुधाकर सौं मम आनन । भुवनेश गयंदन की गतियां कछु मंद भई गतिहीके विधानन । करिहां लखि खीनी सुखीनी परैं सवतैं क्यों चहैं अपनो तज्यो प्रानन ३० आजु गई सखि देखन को बनसूधे स्वभाय कलिन्दजा कूलन । ठाढ़ीहुती ठगिनीसी तहां ठकुराइनियां सुकदम्ब के मूलन । बेनी बिथोरी सुबेसरि मोरी लची करिहां सहि जाय न हूलन । सांची कहौं हौं सबै भुवनेश न काचीअहै रनचो अवभूलन ३१ सराहूं प्रभाकर कुण्डल कान कि आनन ओप मयंक समान । यहै तिय भाल गुलाल निशान महीसुतको किधौं ईसतसान । भये गतिमें बुध मन्द निदान कियो जिन गर्दगयंद गुमान । करै कवि नयननि कौन बखान घटी गुरुता छबि सों उपमान ३२ पीतपटी कटिपै लपटी छुटे कुंचित केश बिराजत चंदन । राजिरह्यो गरे में गजरा गज गौहरको छलकै छबिछन्दन । त्यों भुवनेश भलीबिधि सों सु बजावत बांसुरी आनँद कन्दन । कौन ये हैं अवलोकु अली चले आवतहैं गति मत्त गयन्दन ३३ जावकरंग रँगे दृगहैं जिनते रँगे जातहैं पंकज पायन । अंजन खंजन नयननके अधरान पै धारे कछूक सोहायन । रावरी आजि कहा धौं गई परबीणता

मोहितोनेकु लखायन। प्रातखरे अरसात अहो भुवनेश धकेहिंयकी अबजायन ३४ आईहुमें लखि एक अनोखी सुकंचन बेलि न जातबखानी। इन्दु प्रकाशित तापे लसो लखि कंजप्रफुल्लितभे सुखदानी। ताढिगहीभुवनेश भलो यकबोलै कपोत सुकोकिलबानी। लालचहै चलिकै लखि लेहुनहीं कहती तुमसो मैं कहानी ३५ बुन्द मरन्दन के बिकसे अरविन्दन मैं कछु यों अधिकाने। देखिपरें अनुराग भरे मदमाते मलिन्द भले सरसाने। पातन पात गुलाबनके अब कंटकहू परते दरशाने। आजु प्रभात समय भुवनेश लखी सुषमा अनभूत अजाने ३६ ऊंची उसास बिसूरै कहा इतहू बन बाग अनेक बने। गुंजत भौंर सुनाचत मोर करैं बहु शोर चकोर घने। त्यों भुवनेश जुसीरे समीर बहै कछु मन्द सुगंधसने। है कर कंगन को कहा आरसी देखिहो होत कछू न भने ३७ चंद्रिका चंदसेआननकी अवलोकि सरोजसबै सकुचाने। बाणसी बंक बिलोकनि जानकै त्यों मृग कानन माहिं छिपाने। प्राणसबै ब्रजकी बनितानि के आनिके रावरे हाथबिकाने। सांचोकहो भुवनेश अबैकिन पे फिरभौंह शरासन ताने ३८ तवतो मुख चंदते मोहि लियो इन चित्त चकोरन शोभसने। भुवनेश त्यों प्रीति कीरीति बढ़ायन अंतररास्यो कछुसपने। भयो काह न जानि परे अबधों निठुराई गही इतनी तुमने। दिनरैनि नचावत हो हमको बसेदेश मैं हो पै बिदेशी बने ३६ यक तोहसोचंद सो आननई छबिकुंडल सूर सुभायन मैं।

उदयाचल ऐसेउरोज उदय पुनिमान भरोतिय कायन मैं । गिरिमेरु नितम्बबनेभुवनेश कियेमिलिभारसुपायन मैं । गतिवाकी तो मन्द भयोइद्दहै कहुकौन ग्रहे दुविधायनमैं ४० कोकिल कूकि कलोल करैंकल कोयल कूजै निकुंजनमैं । कीरउदोत कपोतके गोतहके मदसो रव गुंजन मैं । किंशुक केतकी कुन्दजुहीविकसी भुवनेश जुपुंजन मैं । काहे न ऐसीसमयअलितोहिसोहातअहैरस भुंजनमैं ४१ ऐसे उठै नहमाखविहीन घरीघरिरावरीछोहन मैं । नैनचढ़े भुवनेशरहैं नितहीं सिगरीसिग जोहन मैं । सांसरही बलिआसन सोसवे सांची कहौं मनमोहनमैं । राखिदो बाहिचहो जगमैं तो चलोहमरेअवगोहन मैं ४२ अबका हमको समुझावतिहो कहिहै जोकछुनहिं माखिहौमैं । भुवनेश जू बैरनिलाज भईतो सोक अवतो नहिं राखिहौमैं । सबअवगुण देहिं भुलाय अवै उनसों चितचायन भाषिहौमैं । अपने नितनैन चकोरनते मुखचन्द सुधारस चाखिहौमैं ४३ रचि फूलनिको सुबितान घनो भुवनेश कलिन्दजा कूलनि मैं । यहडारो हिंडोरो वृथाही इहां गुनबांधिके थम्भनि थूलनिमैं । लो हिहौ कहाकौन नफ़ा नंदलाल सु ऐसीसमय प्रतिकूलनि मैं । तुमझूलौ इतैमन झूलैउतै उन सौतिनके नय झूलनि मैं ४४ अवलोकत क्यों न अली अवधौं अँगियानिके बन्द ये तंगभये । भुवनेशजू त्योंहीं तिहारे नितम्ब उरोजनि संग उतंग भये । सुनिकै वरबैन सुधासे सबै सुरसोकरु कोकिल दंगभये । तन दीपति देखि भली विधिसों मन

सोतिनहू के पतंग भये ४५ सखिकोन दशा अपनीमें भ-
नों वन गोनअज्ञानपनेते कियो। मदमाते मलिंदन वृन्द
घने अरबिन्दनि नैननि घेरि लियो। भुवनेश कदम्बन
कुंजनमें भजि कोऊ उपावन आयोहियो। तनचंप्रक सो
जोहुतो अलिसो अलिवृन्द दुगायबचायो जियो ४६ ज़ा-
हिर ह्वैबेको मोमुखकी शुभसुंदरता विधिने चितलायो।
चन्द अमन्दहिको भुवनेश रच्यो पुनिताहि अकाश च-
ढ़ायो। सोतो बढ़े ओघटेरी सदा मुखकी उपमानके योग
न भायो। ऐसे कलंकित चंदहिके रचना में कहा विधना
फल पायो ४७ वरबिन्दु गुलालको भाललसो लखिकै
रविमण्डल मन्दभयो। भुवनेश जू त्योंही तिन्हें लहिकै
सु प्रकाशित आनन चन्द्र भयो। सब भांतिसों चित्त च-
कोरनको कछु तैसेई आनँदकन्द भयो। भूले भूलेसे ठाढ़े
ठगेसे अहो कहो काहे तुम्हें नदनन्द भयो ४८ राजत
कुंज गलीन में श्याम विराजति बाम दरीचिका ऊपर।
डीठि चकोरसी श्यामके नैनकी चन्द्रमुखी पै लगी तेहि
ओसर। प्रेमपगी झझकी भुवनेश गिरी वेंदी बेनीसो यों
पगकेतर। मानहु कारो भुजंग महाटपकाय दियो मणि
एक ज़मीं पर ४६॥ कवित्त॥

नैननि मरोरि नीर नेसुक निचोरि दंत अधर दरोरि
करि आई फिरि खोरि खोर। अंग झक झोरि झोरि भृ-
कुटी सिकोरि कोरि मन मन मनति कछुक मुख मोरि
मोरि। कंचुकी सुछोरि छोरि नीके कर कंजन सों कुचनि
दबोरै दुहू जघनको जोरि जोरि। मोरही कहांधौं मारि

भामिनि भवनबैठी भरति उसासैं भुवनेशतुमतोरितोरि ५० घहरि घहरि घनघोर चहुंओर छाये छहरि छहरि छबिछनभा प्रसारैंरी। पवन झकोर जोर दादुर मयूर शोर चोपभरे चारोंओर झिल्ली झनकारैंरी। येरीमेरी वीरवनै धारत न धीरअब पातकीपपीहा पीवपीव के पुकारैंरी। यन्त्रको न धारैं अरु मंत्रको उचारैं जाते तजि केशवास मनमोहन पधारैंरी ५१

सवैया ॥

ब्रजराजके काज सँवारतिसुंदरि मांगनमोतिन आनिभरी। रचिविन्दु गुलाल को बालके भाल गरेमेंलसे मुकुतानिलरी। भुवनेश सुकोन छटावरणों पहिराई जुहै चुनिकैचुनरी। मनु इन्दुबधूनकी वृन्दअनन्दित हेमलता परहैंछहरी ५२ इन्दुबधून को वृन्दनसो बिथुरी महिमें मणिलाल पत्यारी। त्यों भुवनेश झिली झनकार सो नूपुरकी ध्वनिहै अतिप्यारी। घोरघटाघनओढ़नजोन्हसा सारीसजी जरतारी किनारी। याविधि पावसकोमुखमालहि प्यारीचली मिलिवे गिरिधारी ५३ अबका कहिये कहितेनबनै हमरेसँग जो उनऐसोकरी। करिकै बिसवासमैं घातहहा विषघोरिदई मिसिरीकीडरी। भुवनेश न चैनपरैदिनरैनसुऐसीभईहै दशाहमरी। तजिकै हक्नाहक हायहमैं सजनीउनने कुबरीकोवरी ५४ हम सों अबबूझति काहअहो अपनी करतूति कहाकहौंरी। भुवनेशजू भाग्यमें मेरेयही अनयासही दुःख सदासहौंरी। करिप्रीतम शाखसों मानअहोअफ़सोसमैंहाय निते

रहोरी। करती कछुऐसो उपाय अली मिलितेवे यही अबमैंचहोरी ५५ तजिकैकुलकी कुलिकानि सबै तुमसों हमग्रानिकै प्रीतिकरी। भुवनेशअहो भईहौंब्रजमैं बदनामसोऊ मनमैंनधरी। निबही न सोई अबतो तुमसो लगितोरिबे मैंनहिं एकोघरी। परमेश्वरई अबजानतहैं कहिते न बनैहमपेजोपरी ५६ एकसमयमैं कलिन्दजाकूलपै ठाढ़ोहुतोकहु कुंजबिहारी। ताहीसमै मिलि ग्वालिनिमैं कहु आइपरी उत राधिका प्यारी। देखतही हरि आनिगह्यो कर ओझकही झझकी सुकुमारी। होनचहो मनो बिज्जुछटा करि फंदकछू घनअंकतै न्यारी ५७ अंजनके मिसि तान्योजबै सरमीनतबै जलजाय बसेरी। खंजन और कुरंगहुते जे सोऊबनमैं कहु भाजिबचेरी। काहकहों इननैनिसों भुवनेश नमान्यो कित्यो बरजेरी। नाहक्रजाय शिकार कियो उनसोतिन केमृदु प्राणपखेरी ५८ आजुगईती बिलोकिवेको कलकुंजनमैं बलिकुंजबिहारी। ताहितहाँ न मिलेभुवनेशतबै गहिबैठि कदम्बकी डारी। बेदनऐसो बढ़ोतनमैं क्षणमैं गइव्वैसी न जाति निहारी। कैसेगहै गृहकी अबगैल गईवहकामके बाणनि मारी ५९ जाती जहांई जहाँ सखिमैं मगमाहीं मजीठिसी क्यों ढरकीपरै। कंचुकीतो कसिजाति सोहै पर घांघरी लंकतै क्यों लरकीपरै। ह्वैगये हैं पुखराज से क्यों गरेके मुकता छतियां धरकीपरै। जानिपरै न हमैं भुवनेश सु क्यों यहरोमवली फरकीपरै ६० बिरहानल ज्वालके झारन तै भुवनेश निते मरझानि परै। अँगअंग

मलीन भयेहैंसबै अबनेकुनहीं पहिचानिपरै । कसकै उर
अंतर ऐसोबढ़ी हमसों कछुनाहीं बखानिपरै । कहिकैतु-
मसों हमजातिचली अब कीजियेजो जियजानिपरै ६१
पानिपसों भरी सोहैंसरोवरि ताढिगकोक कलोलकरै ।
चम्पकचारु चमेली अपारसी फूलिरहीं शुभशोभसरै ।
कोकिल कीर कपोत सुराजितभौरकी भोरभलीविचरै ।
छाजिरही भुवनेश वसंत मैंशोभाशशी समता नधरै ६२
बनबागनके प्रति कुंजनमें घनी लोनी लवंगलता लहरै।
बसिके नभमंडल मैंभुवनेश भले छनजोन्ह हियो थहरै ।
वरषै घन आँसुन ज्याजननीर तऊपै अधीरभये घहरै।
पपिहाऊ पियारट लायोकरै मनमानुषको नहिँक्योंह-
हरै ६३ जब बोलतहैंवै दयाकरिकै चुपकैसेरहैं मनजात
हरो । उनसों मिलिकै अभिलाषसबै तुम्हैंरोकत कोकिन
पूरीकरो । भुवनेशजू लाभकहा यहिमें हमसोंजुपै नाहक
होझगरो । विधिभालमैंजोई लिखी सोईहोत अहो इन
बातनमें न परो ६४ चमकीसीफिरै चपला चहुंघा द्युति
दन्तनकी जबहा सरसै । सुनिकै भुवनेशजूवैनसुधा सम
कोकिल बोलनिको तरसै । यहमेरैही अंगनके परसादते
पावसकी सुषमादरसै । लखिकै अलकैघनआँसुन ज्याज
बड़े बड़े बूंदनसों बरसै ६५ ॥

दो० संसिसंसिसंसैससीसांसैसीससिसीस ॥
सीसा सैसे सास सोससै ससै सास ६६

सवैया ॥

शम्भ किधौं सरसाबेसबै विधिहेम के आसन राजि

रहेहैं। सोहत केधौं सुमेरु के शृंग सु बारण कुम्भहि लाजिरहेहैं। त्यों भुवनेश मनोजलता किधौं श्रीफलसो सुखसाजिरहेहैं। तेरोउरोज सरोज किधौं तनपानिपपै छबिसाजि रहेहैं ६७ हौं नहिं जैहौं अलीघर नन्दके फन्द करै बहु नन्दललाहैं। मन्दहिं मन्द सुहासनि को लखि मन्दभयो शुभ सोमकलाहैं। कासोंकहौं भुवनेश सबैदुख यों ब्रजमें चवचन्द चलाहैं। चाइचवाइनैकीबो करैं उनको मुखबन्दन एक पलाहै ६८ चौंकैं चकैं चमकैं चुपह्वै मृग चारिहु ओर निहारत हैं। खंजन दाग़ धरैं उरमैं अलि आरतह्वैकै पुकारतहैं। नैननिमें भुवनेश जबैहम अंजन आनि संवारतहैं। झोरि झकै झमकैं झझकैं झखिकै झख यों झख मारतहैं ६९ भुवनेश गुलाब से गातनपै नितनैननि तें जलसो झरिहैं। चकेचित्त चकोरनहू चुगिकै बिरहानल ज्वाल सबै हरिहैं। घनश्याम प्रवास चलै तौ चलो शिख यों हमलै चितमें धरिहैं। करिहैं छतजोपै मनोज अहो तो कहो हमकौन दवा करिहैं ७० चन्द के भोरे लखेमम आनन आवत आली घनेरे चकोर हैं। मो दृगको अनुमानिकै कंज अली गणधाये फिरैं चहु ओरहैं। कासों कहौं भुवनेश जू अवगुण आपनो नाहीं कछूकयेथोरहैं। आवती नाजुपै जानतीमें कि इतै उपहासनके झकझोरहैं ७१ अलि आपनो भेद बताव न क्यों हमसों अबकाहे सकानीरहै। भुवनेश भरोतन पानिप श्याम बिलोकि कहामुरझानीरहै। चितै चन्दसी चोखी चवाइन वृन्द चकोर सी तू क्यों

जकाती रहै । अखियां अलिसी मुख अम्बुज को रस लेततऊ ललचाती रहै ७२ ॥

कवित्त ॥

बारिजबदनपै बिराजै अलिवृन्दकेश शीशफूल शोभा ताकि तरणि लजात है । दन्तनि में दामिनी तें दीखत दुचन्द द्युति आनन अमंद चन्द शरद सोहातहै । नीरजनि क्षोभ कीनीननि छबीली छबि शोभातैस रसमन रस सरसातहै । भुवनेश राजै सुखमालनि बिशालभरी षटऋतु ख्याल लालबालमैं लखात है ७३ ॥

सवैया ॥

बिननीर के व्याकुल ज्यों रहै मीन सुत्यों दिन रैन बितावति है । भुवनेशजू पूरि उसासन सों बिरहानल औरो बढ़ावतिहै ॥ वह सत्य सनेह के दीपति में निज अंग पतंग बनावतिहै । तुम्हैं हायतऊ नँदलाल कहूं अब नेकु दयानहिंआवतिहै ७४ लखि आनन चंद्रसरोजसबै सकुचाय कैलाज लह्योई चहैं । भुवनेशजू त्योंही चकोर चहूं ते उमाह भरे उमह्योईचहैं । चितै रूपसलोनो सो सौतिन की अखियानतें आंसू बह्योईचहैं । अवलोकिकै अंजन नैननिमें उरखंजन दाग गह्योई चहैं ७५ ॥

कवित्त ॥

यामिनी अंध्यारी में अँध्यारी घहरारी घटा निरखि अटान तें सुखारी प्राणप्यारीहै । धारी शुभ्र सारी अंग भूषण सँवारी सबैनिज छबिसारी गन तारकन वारी है । चंद्रिकापसारी भुवनेश मंदहासनतें बासन नगारी

ारिधारीपै पधारीहैं। मानौ चन्द्रआपहिचकोरनकेप्रेम शमिलन चल्योहैलहि आनँद सुभारीहै७६ निशिअँधि-ारीप्यारीकारी घनश्याम घटाभिरखीअटारीसुखकारी मुकुमारीहै। अंजनदृगन साजिसुषमासरोज श्याम हारी निहारी तनमन वारिडारीहै। बरजरतारीकी किनारी श्याम सारीधारी हैतुबनवारी भुवनेश छबि न्यारीहै। हलारीअभ्रमा सुघन घहरारी घटातामें छबिसारी हि-कारी उजियारीहै ७७ पीव पीव पातकीपपीहा ये पु-कारैं नित सहज सुभाय नहीं पावक पसारैं हैं। पादप ालाशके प्रसूनन अँगारनसों लसि लसि डारन अँगा-रन सों झारैहैं। भुवनेश ऐसिये परीती बिरहानल में ावरे अनंग अंग बिष क्यों बगारैहैं। आपु तो जरेको ुख जानत भलीही भांति काहेजरे अंगन को फेरिअब जारैहै ७८ लालछबि लाल रविमंडल प्रभात भात लालही बसन लसिलाल ललकतुहै। लाल अधरानकी सुलाली लसी लोचन में आलिआन लालीसो कपोल बिलसतुहै। भनै भुवनेश बेश बिन गुनमाल उरधरिकै सुशाल बनलाल निंदरतुहै। पगलाल पागलाल एते लाल पाय अबलेरे लाल मोहिलाल नाहक करतुहै ७९ चम्पक चमेली चारु बेलीसी नवेली ब्रज हीय हरषाय सुखछाये सबठामहैं। चंचल चपलसी चलाकैं बहु चाय भरी नचत अटान पै कलापिनी ललामहैं। भनै भुवनेश आश चातक भलीही भांति पूजन चहत यह फैलीबात आमहैं। देखुछबि छाये हरषाये सरसाये बहु आजुघाये आमहैं।

धाये जनुआवैं घन श्यामहैं ८० गरजैं चहूंघा घनघोर
मोर शोर करैं लरजैं लतान वृन्द शोभा सरसाईहै।
दामिनी दमाकैं जुरि जुगनू चमाकैं चहूं क्वैलिया दि-
माकैं भरी कूकैं सुखदाईहै। मन अनुरागै प्रीतिरीति उर
जागै लखि इन्दु भटरागै बनबागै छहराईहै। व्रजवि-
हारी पै हमारी भुवनेशयेती दंपति मिलापहित वर्षा
ऋतुआईहै ८१ सुन्दर सुखारे अनियारे कारे कारे घन
धारे बहु भेष धाय धारे बरसतुहै। तरुण तरारे न्यारे
न्यारे उद्गारे पौन दादुर दरारे धुनिधारे दरशतुहै।
पीपीकै पुकारे पपिहाऊ प्यारे प्यारे सारे धुंधुकारे
दुंदुभि अनंग सरसतुहै। अचरज यामें कहु कौन भुव-
नेश जोपै श्यामै मिलिवेको मन मेरो तरसतु है ८२
अंग अंगराग के सु गंधके झकोरन सों यमुना के तीर
धीर डोलत समीरहै। चम्पक चमेली से नवेली के
विकासे तन सोहत गुलाब सो गुलाबी रंगचीरहै।
चांदनी चहूंघा भुवनेश मंद हासनि की देखिकै चकोर
चित्त धारत न धीरहै। ऋतुराज सुषमा सुसाजि आजु
या विधि सों आतही समयमें बलिआवै बलवीरहै ८३
घन ऐसे घन श्याम श्यामा संग राजतहैं मानो यमुना
तरंग संग गंग जलहैं। उरमें बिशाल मालदेत मुकतान
छबि लाजत स्वफविको सुतारे नभ थल हैं। कुंडल
प्रभाते भुवनेश सो है आननयों मानो देखि सूर
फूले अमल कमल हैं। कहां लौं बखानों नन्दलाल
को सरूप रस दुर्जन को प्रबल सुसज्जन सरल हैं ८४

सवैया॥

लखि लालनके तनकी झलकी कुलकी कुलकानि मिटावतीहो। लटकीली मनोहर चालनमें मनयों अपनो उरझावतीहो। अरबिन्द से आननपै भुवनेश मलिन्दसेनैन भ्रमावतीहो। परिपूरित प्रेमके पैठमेंपैठि मनोहररूप लुटावतीहो ८५ मोहन आनँदमें किमिचित्त चकोरनको भुवनेश छकायहो। पंकलगाय कपोलनपै शशिकीसमता नहिं आनन छायहो।धारिहिये नखदाग भली विधि मेरेहिये अनुराग बढ़ायहो। जानिपरी तुम्हरी करतूति सुबातैं बनाय कहा फल पायहो ८६ हमको बुलवायो तुमहींजबहीं तबहीं कहीवानि सोजानतीहो। भुवनेशजू फेरि जिताईतुम्हैं यहूबात हमारी प्रमाणतीहो। तुमआपुहि भूलि गईनउतै फिरिक्यों मनमेंदुख मानतीहो। गुण अवगुणतो न गनोअपनो हमपैवृथा भौंहनि तानती हो ८७ तुम ठानतीहो अपनेमनकी हमरो कहनो नहिं मानतीहो। भुवनेशनहीं तनिकौ तुमतोसुभलो औबुरो पहिंचानतीहो। करिप्रीति निबाही कहांउनने इनबातनको सब जानतीहो। तऊ नेहकेफंद परयोईचहो कहिये कहोकौन सयानतीहो ८८ सबहीहमजानतिहैं तुम्हरी हमसोंतुम का बतलावती हो। भुवनेश यही तुम्हरो है हितूपन जो हमको बहलावतीहो। उनकोतोकछूनकहो उलटे हमहींको सदासमुझावतीहो। हम सूधीअहैंयहितें तुमहूं हमहीकेहहाय दबावतिहो ८९ हमहींका अकेली रही उनकेसँगजोपै हमैंदग तानतिहो। भुवनेशहितू जे

बनोये अहैं इनकीगति नाहि पिछानतिहौ। अलि कौनसी बात अहैतुम्हरी हमको हकनाहकसानतिहौ। तुमतोरस चाख्योकहौ किनको बनीऐसी किञ्जानोनजानतिहौ ६० कछुजानिपरैतुम्हरीतोनहींउनकीनितगैलअगोरतिहौ। भुवनेशजू सीख न मानोंकछू कुलकानि तगा हठितोरति हौ। यह लाजकीहाय जहाजभलो तुमनेह नदीमहँ बोरतिहौ। हमतो अबऐसे कहाकरैंगी हमपै वृथालैन संशोरतिहौ ६१ जबहीं इतै आवतीहैं तबहीं हमको तुम आनि निहारतुहौ। भुवनेशजू जातीरहै कुलकानि सोई अबबैन उचारतुहौ। अनसैं तुम्हैलोग कहाकहिहैं तुम जो लटीवात विचारतुहौ। यहवात सयानपने की नहीं वदनामीको धागो जो धारतुहौ ६२ तिरछे करिके कहो नैनकहा अधरान सोदंत दरोरतिहौ। गुरु लोगन डीठि वचायकै त्यों तुमरंचक भौंह सिकोरति हौ। भुवनेशजू देकछु सैननको अनतै अपनोमुख मोरतिहौ। यहकौनसी बातअहै तुम्हरी चितमोरे उलाकर घोरति हौ ६३ कहिये तुम्हैऐसो अहोब्रजचन्द्र जुपै हमसोमुख मोड़ते हौ। भुवनेशजू प्रेमकी बातैंसबै तबालौं हकनाहक तोड़तेहौ। कहिदीजिये जू सब सांचीअबै अनतै सुखकोन हलोड़तेहौ। यहि भांतिनसों हमैं धीरेही धीरे अहोअब जो तुम छोड़तेहौ ६४ तबतो बहुभांतिन सों सजनी चहों और ते नेह घटाउनहैं। भुवनेशजू का कहिये अबतो कहिजात कछूउनऐसी ठई। बिपरीतिभई सब प्रीतिकी रीति हमैंबिरहागि में नादितई। उनको अबदोष दियेहै

कहाभई भाग्यमें जोपै दईनेदई ६५ करिहैंकरिचावक-
हावैसबै हम श्यामपै चित्त दईतो दई। भुवनेश नहीं प-
रवाहकछू बदनाम हमैंजो कईतो कई। भयो काहकहौं
इन बातनसों कुलकी कुलकानि गईतो गई। उनकोकह
लागतिहै सजनी हमसों लटिबात भईतो भई ६६
अम्बुजसे तनु कोमल की छहरी छबि मानो छपाछबि
छाई। मौक्तिकमाल गरेमैलसै सुन क्षत्रनकी सुषमाउ-
पजाई। पूरणचन्द्र सो आनन ओप भनै भुवनेश सदा
सुखदाई। है धिकनैन चकोर तुम्हैं यहि बानिकमें जो
लख्यो न कन्हाई ६७ सखिदेखो कहा अबदेखतुहौं ब-
निआये हहा मनमोहनये। अधरानमें अंजन साजिरहे
मनो गंजनहै मद गुंजनये। भुवनेशजू कंजन पुंजनके अ-
नुरागभरे दृग खंजनये। इन आननको अवलोकि छटा
निजअंक कलंक शशीकलये ६८ इष्ट चतुर्दशते गुणिके
सुनिशाकर फेरि नियोजित कीजिये। ताहि दिवाकर सों
गुणिये भुवनेशतबै बसुभागहि दीजिये। शेष एकादशते
नहतो पुनिबग्गहि कै घटतामहँ छीजिये। सप्त नियो-
जि सबैबिधि सों शुभसम्बत् बिक्रमको गहिलीजिये ६६
टीका॥ (इष्ट चतुर्दशेति)
इस कवित्वके टीकाकरने के प्रथम हम यह विद्वज्ज-
नोंपै निवेदन किया चाहतेहैं कि इस कवित्वकी रीतिसों
जो सम्बत् निकाला जाताहै अत्यंत गौरवहै और इस
कारणसे श्रेणी दोषकीभ्रांति होसक्तीहै-हम इसलिये
क्षमाके अभिलाषीहैं-परन्तु श्रेणीदोषमेरेबिचारसेऐसी

उक्तिमें नहीं समझाजाता कि जिसमेंकोईविशेष चमत्-
कार भासमान होताहो—सूरदासजीने लिखाहै॥
दधिसुत के सुत तासुत के सुत तासुत भषुवदनी २
और औरभी अनेकराग इसीतरह परहैं—इसरीतिपर
जो मैंने सम्वत् निकालाहै मेरा मतलब यहहै कि यह
बात इससे मालूम होतीहै कि जिसतरहपै श्री यशोदा-
नन्दन आनन्दकन्दजूने सबविद्यामें चमत्कार करदिया
है उसी रीति पै गणित विद्यामें बहुतसी बातें चमत्-
कारकी प्रकाशमान् होरहीहैं—हमारे जिनमित्रोंको ग-
णित विद्यामें अधिकार होगा यक़ीनहै कि उनको ये चा-
रछन्द सम्वत् निकालनेके बहुत पसन्दपरें (प्रकटहो)
कि अंक एकसे लेकर महाशंखपर्य्यंतहैं—उन्नीसअंकतक
गणनाहै उसके उपरान्त महाशंख बोलेजातेहैं (इष्टनाम
इच्छितकोहै) याने एकसेलेकर महाशंख पर्य्यंत जोअंक
ग्रहण करलेवे उसीको इष्टबोलेंगे (यथा एक वा पैंतीस
वा सौ वा सहस्त्र) इसीरीतिपै जानौं—गणित विद्यामें
यह प्रधानबातहै (अंकानाम् बामतो गतिः) इसका अर्थ
यहहै कि अंककी बामगति नाम उलटीगति होतीहै—
(यथा) हमने कहा गुणदृगगुणनामतीनि—दृगनामदोतो
इससे तीनिके आगे दो बोलागया (बत्तीस समुझिपड़ा)
परन्तु अंककी बामगति होनेसे उलटिगया याने दोजो
पीछेबोलागयावहआगेहोकरतीनिपीछेगया-इस रीतिसे
२३ हुये (यथावसुवेदनाम)अड़तालीश कोहै इसरीतिसे
कि वसुनाम आठकोहै और वेदनाम चारि अंककी बाम

गतिके होनेसे चारिपहिले और आठपीछे हुआ इसका-रणसे अड़तालीश हुये—गुणन और भागादि की रीति लिखनेका कोई प्रयोजन नहींहै प्रकटहै सेवाइ इसके यदि लिखीजावै तो कुछ फलदायक नहींहोसक्ती क्यों-कि जो हमारेमित्र यहचाहैं किगणित विद्यामें अधिकार न रखकर केवल उसीरीतिसे कि जो यहां लिखिदीजांय काम निकालसकें तो ऐसानहीं होसक्ता इसके कारण अनेकहैं कि जिनका यहांलिखना व्यर्थहै (+) यहचिन्ह जोड़काहै (यथा) १+ २इससे यह मतलबहै कि एकमें दो जोड़ो (−) यहचिन्ह बाक़ीकाहै (यथा)२ —१मत-लब यहहै कि दोमेंसेएकघटाओ (×)यहचिन्ह गुणन काहै (यथा) २×३ मतलब यहहै किदो को तीनिसे गु-णो (÷)यहचिन्हभागकाहै (यथा) ४÷२मतलबयहहैकि-चारिको दोसेभाग दो(=) यहचिन्ह बराबरकाहै॥एक अंकउसीअंकसे गुणो उसेवर्ग कहतेहैं(यथा) ३×३ तो६ तीनदफा वर्ग हुआ—अबहम ज़रूरीबातेंइनछन्दोंकेअर्थ करनेकी लिखचुकेहैं अब असली कवित्वका अर्थ लिखा जाताहै इनसबछन्दोंसेसम्वत् १६३७की प्राप्ति है कि जिसमें यह ग्रन्थरचा गया है——इष्ट × १४ + १ × १२ ÷ ८ शेष ११ × (शेष × ११)—६ + ७ = १६ ३७ मतलब यह है कि इष्टको चतुर्दश नाम चौदह से गुणो निशाकरनाम १ तामें मिलावो याने इष्टको गुणन करनेसे जोलब्धिहै उसमें १ मिलावो जो एकके मिलानेसे अंक प्राप्तहो ताको १२ ते गुणो जो अंक गुणे से हुआ

वाको आठसे भागदो लब्धिसे कुछ प्रयोजन नहीं जो शेष बचे वाको ११ ते गुणो जो अंक गुणन करने से हासिल हुआ उसका वर्ग बनाओ नाम उसको उसी से गुणनकरा जो अंक अब मिला उसमें से ६ घटाओ जो बचै उसमें सातमिलावो सम्बत् १६३७ किजिसमेंग्रन्थ बनाहै हाथआवैंग (यथा) हमनेइष्ट ५ लिया ताकोम१४ ते गुणा ७० हुये फिर चन्द्रनाम एकजोड़ा ७१ हुयेगुणा १२ ते ८५२ हुये ८ ते भागकिया शेष बचे ४ गुणा११ ते ४४ हुये वर्गबनाया याने ४४ को ४४ ते गुणा१९३६ हुये ६ घटाया १९३० बचे सात मिलाया१९३७ मिले यही सम्बत् प्राप्त हुआ औरभी इसी रीति से जानोजो चाहो सो इष्ट मानिके इसकवित्वकी रीतसे गुणनभाग करोगे तोसम्बत् १९३७ उन्निससौसैंतीस हाथआवैंगे ॥

षट्पदः॥

इष्टहि गुणि वसुवेद फेरि चन्द्रहि योजित करु। गुण हगते गुणि ताहि भानुते लेहुभाग वरु ॥ शेषनि अंकनि वेद गुणित करि वर्गहि अनुसरु। वर्ग अंकम वेद योजि गुणि तातेपुनि हरु ॥ अबजो प्रकट्यो शुभअंकयह बत्सर बिक्रम भूमिधर। भुवनेश भन्यो यामैं सुभगराधा माधव चरितवर १०० (इष्टरीति) इष्टको बसुवेदनाम ४८ ते गुणो जो लब्धि मिले तामें चन्द्रनाम १ जोरि तामें ताको गुणहग नाम २३ ते गुणो जोअंकमिलै ताको भानुनाम १२ तेभाग देहु शेष जो बचै ताको वेद नाम चारि तेगुणिवर्गबनाओ जो वर्ग अंकमिलैतामेंवेदनाम४

मिलाय गुणताम ३ घटाओ १६३७ सम्वत् हाथआवैगो अन्तकपदसुगम यथा ३ इष्ट ताको ४८ ते गुणा १४४ हुये १ मिलाया १४५ हुये २३ तेगुणा ३३३५ हुये १२ ते भाग कियाबचे ११ गुणा ४ ते ४४ हुये वर्ग बनायायाने ४४को ४४ते गुणाउन्नोससोछत्तीस १६३६ हुये ४ मिलाया १६४० हुये ३ घटाया १६३७ सम्वत् प्राप्त हुये (छप्पय) इष्ट द्विगुणि षटधरैआदि धरिअन्त सप्त पुनि। ताहि पंचगुणि अंक करोपुनि ताहिवेदगुनि। पञ्च नयन लहिभाग शेष गुण युग गुणिदीजै। त्रिगुणि ताहि दृग योजि सुभग सम्वतुगहिलीजै। यहिमेंराधा माधव चरित कबिभुवनेश सुभनतभो। भुवनेश सुभूषण ग्रन्थमें तेहि प्रसाद मुदलहतभो १०१ (इष्टद्विगुणोति) [६(इष्ट×२)७ ×५×४ ÷२५ शेष×४३×३+२= १६३७] इष्टको२तेगुणि आदिमें६ अरुअंतमें ७ धरैयहि प्रकारते अंकबनाय ताको ५ ते गुणिफिर ४ ते गुणै— फिर ताको पंचनयन नाम पच्चीसते ÷ भाग देइ शेष गुण युग नाम४३तेगुणैफेरि तीनितेगुणिदृगनामदो मिलाय— १६१७ सम्वतुगहि लीजिये अन्तके दो पदसुगम—यथा इष्ट २ माना गुणा २ ते ४ हुये ताके आदिमें ६ धरे ६४ हुये अन्तमें ७ धरे ६४७ हुये ५ ते गुणा ३२३५ हुये ४ तेगुणा १२९४० हुये २५ ते भागकिया १५ शेषबचे गुणा ४३ ते ६४५ हुये गुणा ३ ते—१६३५ हुयेतामें दो २ मिलाया उन्नोशसो सैंतीस हुये=१६३७(छप्पय) इष्टद्विगुणि पुनि त्रिगुणि सप्तगुणिअंकबनावे। तेहिप्रति

अंकहि जोरि फेरि तेहिमाहिं घटावै॥ शेष त्रिगुणि दृग याजि चतुर्गुणि गिरिचख भाजहु। ताहि शेषगुणि रुद्र द्विगुणि एकादशगुणिअहु। यक फेरियोजि सुंदर सुभग सम्वत् बिक्रमको गह्यो। यहि में राधा माधव चरित भनि भुवनेश सुयश लह्यो १०२। इष्ट द्विगुणीति——

इष्ट × २ × ३ × ७ अंक ताकेप्रतिअंकका योग शेष ३ × २ × ४ ÷ २७ शेष × ११ × २ × ११ + १ = १६३७——

इष्टको द्विनाम २ ते गुणौ फेरि त्रिनाम ३ ते गुणि सप्त नाम ७तेगुणि अंकबनावे अब यहअंक जिन जिन इकाई से बनाहो आपस में जोरिकै इसी अंकमें घटादो शेष त्रिनाम तीनिसों गुणि तामें दृगनाम २जोड़ि चतुर्नाम ४ ते गुणि गिरिचखनाम २७ते भागदेइ शेष ११ ते गुणि द्विनाम २ ते गुणौ फिरि एकादशनाम ११ ते गुणि १ मिलावे १६३७ सम्वत् मिलैगो——

यथा इष्ट १३५ माना ताको २ ते गुणा २७० हुये तीनिसे ताको गुणा हुये ८१० ताकोसातसगुणा५६७० अब यह अंक ५ और ६ और ७ और शून्य ते बना है इसहेतु येई याने ५ और ६ और ७ और शून्य इस अंक के प्रतिअंक हुये इनका योग ५ + ६ + ७ + ० = १८ यही ५६७०में घटाये शेषरहे ५६५२ गुणा ३ से हुये १६९५६जोड़े२हुये १६९५८गुणा४ से हुये६७८३२ भागकिया २७ ते बचे ८ याको गुणा ११ ते हुये ८८ याको२तेगुणाहुये १७६ याको ११ते गुणा हुये१९३६ मिलाया १ हुये १९३७॥ इति॥

उद्धिबद्धचित्रम् ॥

दोहा ॥

पहिले सुधे पढ़िय पुनि काहू भांति न मित्र ।
प्रकटै भाषा छन्द बहु उदधिवद्ध सो चित्र १

टीका—अनेक भाषा और अनेक छन्दजामें प्रकट होयँ सो उदधिवद्धचित्र जानिये ॥

प्रथमरूप ॥

१ घनाक्षरी ॥ भुवनेशआयो ऋतुराज साजेगुल छबि रतकलोलकीर कोकिल फवतफाब । सोहैं शुभकमल कतारैं छायेजलमांझ कौन समय आई चितमा हैं भौंर माहताब ॥ डोलैं पवन मधुर सुधारिगति कुंजन में क-तोरी हवाल कौनमनसिज आबताब । बलिबलबीर र चाहौं मैं चलन अब अबलाहमहिं जानितैं कछु न कुताब ॥ (अर्थ सुगम)

२ कवित्त ॥ हैं बिकाशमान सुवितानछवि छाये सो हैं मालतीबिशाल बिश तामेंढ़ारै खसबोय । अनार सेबनी आफ़ताब मुखी गेंदा बेला बन सब कीन्हें कान्ति मान रूप मोहहोय ॥ जही केवड़ा सुगुलाचीन चम्बेली करन अवादान कीन्हें गुलदावदी यमुनतोय । बीर अब निशिरहीथोरी बनहिंबोलैं कीर मजानारिसानेपूर वादा पढिहै नकोय ॥ (अर्थ सुगम)

३ दोहा ॥ भवँर राजई कै रहत कुसुम हृदय रसपान ।
भोरे जुरिकै आवलो नख्ने रख्ने गान ॥ अर्थ सुगम

४ दोहा ॥ धनि गौरी शिवशंकर लक्ष्मी धन्य दिनेश ।
धनिबिधिभैरोंआदिकैंचिन्नोगुनसुरेश॥(अर्थसुगम)

५ कवित्त ॥ मेरो हार लायकरि मेरेउर डारे धीर बल-
बीरआवें लखु श्यामासँगबिहरत । कछुकबहारकरोंहौंहूं
जाय कृष्णातीर बीरकछू धीर ना आवत हिय प्रीतिरत ॥
चंद्रकी है प्रभाफैली कृतकृत्य आजु भई तापसब दूरिकहै
बदन शशीशरत । कछू प्राणप्यारेमेरे कृपा केकरेंगे अर्थ
सारस रासनि सने पदौ ना कछू करत (अर्थ सुगम) ॥

६ कवित्त ॥ जहँतहँ बोलैंकीरझूमाकरैं मोरमस्तघूमिघूमि
गोपीगण गावैंमञ्जु दै दैताल । संपागण भूरिघनमाहिं
हैं प्रकाशमान सोहहिंपल्मारी इन्दुनारी जहँवमिशाल ।
लोलबेलि छाजोंछवि देखिये न अन्यथल बककीकितेक
पंक्ति भ्राजैं सुखदा बिशाल । चातिक प्रशस्तमन हुल-
साने पूरैंआस केलिकरि प्रभुसङ्ग डारिदे अनङ्गजाल ॥

७ कवित्त ॥ रञ्चरुखपायतुअरुवारथ निकासचाहै देरमति
कीजै बलबीर उतै आवा अब । कीरसों नासा शोभैंभवँर
कचचम्पतनु सुनिशिनाथ मुखबनेतापनि बुझाओसब ।
बोलज्यों पिकबयन ताकोलाल सोहैबहु भिन्नछिटकारै
छबि सरस सुहावो लब । जानि लीजे रवगणल्याईहेतु
तेरेजसतेजपुञ्जएनराजै मदनलजाओफव ॥ (अ० सु०)

८ दोहा ॥ जोहति श्यामा आपलुव डगर लखिये श्याम ।
रटतिअटापै बैठी ध्यानिधे तव नाम (अ० सु०)

सोरठा ॥ सन्ध्याहीमेंआनि नच्चै गावैं इन्दुमुखि ।
सबशोभाकीखानिचलतनकसनिरखेबनै ॥(अ०सु०)

१० संस्कृत द्रुत विलम्बित छन्द ॥

लोकः मधुरताबचनेहृदिधीरतारसिकतातिगुणेयुधिबीर
ता॥ निपुणताकथनेअसमर्थतारघुपतेभुवनेशदयानिधे १

टीका—कवि श्रीरामचन्द्रजू की स्तुति करैहै कि हे
रामचन्द्रजू आप कैसेहैं भुवनेशनाम भुवन जो पृथ्वीहै
ताके ईशहैं और रघुपतिहैं और दयाके निधिहैं आपके
बचनमें मधुरताहै और हृदिनाम हृदयमें धीरताहै अति
गुण जो बड़े २ गुण हैं तिनमें रसिकताहै अर्थात् गुणों
के रसके जाननहारहैं और युद्धबिषे बीरताहै सो आपु
की निपुणताके कथननाम वर्णन में हम मनुष्योंको अ-
समर्थताहै अर्थात् वर्णन करिबेको सामर्थ्य नहींहै ॥

जिनअक्षरोंपै एक एकको अङ्कधरोहै तिनकेपढ़िबे में
यहछन्द कढ़ैहै ॥ ११ अरबी जबान॥

(वल्लाह आलम बिसवाब)

काहूदूतीने काहूनायकासों कहीकि तोसोंमनमोहन
अत्यन्तप्रीति करैहैं ताकोउत्तर नायकाने यहीदियो—
पद१ वल्लाहनाम ईश्वर आलम नाम जाननहारबिस्
वावनाम उचित ताकोहै अर्थात् याको ईश्वरजानै जिन
अक्षरों पै दो को अङ्क दियोहै वाके पढ़िबे में यह अरबी
भाषा कढ़ैहै ॥ १२ अङ्गरेजी भाषामें छन्द ॥

(गाड हेलपस आलकेरनाट ग्रेटाल)

(अवतरण)काहूअनुरागिनी नायिकाको विकलदेखि कोऊसखी शिक्षा करै है ॥

टीका--गाडनामईश्वर हेलपसनाम सहायता करतुहै आलनामसबकी केरनाटनाम चिन्ता न करु ऐटालनाम बिलकुलयांमेंसवर्णोदीर्घःसः सूत्रसेऐटालभयोहै अर्थात् सखीकहैहै ईश्वरसबकोसहायताकरतुहै कछुहू चिन्तान करुतेरोभीमनोरथ पूरो होयगो जिन अक्षरो पै तीनिको अंकधरोहैताकेपढ़िबेमें यहअँगरेज़ीभाषाकाछन्दकढ़ैहै ॥

१३ फ़ारसी मिसरा ॥

(रुखस् दीदा बदिल आवर्दा महदाग़)

(अवतरण) काहूदूती काहू नायकाके मुखकी शोभा मनमोहनजूसों बर्णैहै—

टीका—रुखस्नामवाको आननदीदा नाम देखि बदिल नाम हृदयमें आवर्दानाम लायोहै मह नाम चन्द्र दाग़ नाम कलंक अर्थात् वाके मुखकी शोभादेखि चन्द्रने निज अंकमें कलंक धारण कीन्होंहै ॥

जिन अक्षरोंपै चारिको अंक धरोहै तिनके पढ़िबे में यह फ़ारसीको मिसरा कढ़ैहै ॥

१४ भाषा चौपाई ॥

शंकरप्रणतपालकरुणाकर।करौकृपामोहिंदेहुअभयबर॥

जिन अक्षरों पै पांचको अंक दियोहै तिनके पढ़िबे में यह चौपाई कढ़ैहै ॥ (अर्थ सुगम)

१५ उर्दूभाषा में मिसरा ॥

(बहाराईशगुफ़ताहोगयेगुल)

(अवतरण) काहूदूती गुरुजनमें काहूसखीको बैठी

देखि यह जनायो चाहैहै कि मनमोहनजू आये अरु राधिका को मन जो मलीनहुतोसो प्रफुल्लितभयोनाम आनन्द ह्वैगयो पै स्पष्ट नाहींकही व्यंगसों कहैहै—
टीका—बहारआई नाम बसन्त आयो शिगुफ़ता होगये नामप्रफुल्लित भयोगुल नामफूल अर्थात् बसन्त आयोफूल फूलिगो श्रीकृष्णजूको बसन्तकह्यो अरु राधाजूको फूल कह्यो बहाराई में सवर्णोदीर्घः सहसूत्रलगैहै जिन अक्षरों पै छःकोअंकधरोहैतिनकेपढ़िबेमेंयह उर्दूकोमिसराकढ़ैहै ॥

१६ भोजपुरी भाषामें ॥

दोहा ॥ मनलिसिनाबरजनिकछू हरिसनकरलीमान ।
अइलेजबते सुरभि है बहिगो सबहि गुमान १

(अवतरण) काहू सखी काहू सखीसों काहू मानिनी नायकाको मानमोचन की कथा जनावैहै—
टीका—मनलिसनानाम मान्यों नहीं बरजनिनाम बरजिबोकछू हरिसन नाम हरिसों करलीमान नाम मान कीन्हो अइले नाम आयो जबते सुरभिनाम बसन्तहै हगो सबहि गुमान तात्पर्य्य यह कि मेरी बरजनि मानिहरिसों मान ठान्यो पै जबसों बसन्तआयो सबै गुमान बहिगयो नाम मान मोचन ह्वैगयो—
यहदोहा जिन अक्षरों पै ७ को अङ्क दियोहै तिनके पढ़िबेमें कढ़ैहै ॥ अढ़ाई २ घरसों—

१७ भुवनेश ॥

यह कविकोनाम कढ़ैहै जिन अक्षरोंपै आठको अङ्क धरोहै तिनके पढ़िबेमें चारोंकोनाके अक्षरों ते—

आ न व ब ज य गुरुलघु चित्र काव्यमें एक जानेजाते हैं

इतिउदधिबद्धचित्रम् ॥

दोहा ॥ महामहा गुण राजते जहँनतृणहु लोलत्व ।
कीरसोनासा माथबिधु सिंधुथाह धीरत्व १
गहियकद्वैतैतजिबरण जोरिघरहुयकठाम ।
यादोहाको मित्रमम प्रगटैगो कवि नाम २

यहऊपरवाले दोहासों कवि श्रीरामचन्द्रजूकी स्तुति करैहै पद १ रामचन्द्रजूकैसेहैं कि जिनमें महामहानाम अनेकप्रकारके गुणराजतेनाम शोभायमान् होरहेहैं जन् गुणसों शोभायमान् होते हैं औरश्रीरामचन्द्रजू में गुण प्राप्त ह्वैके शोभैं हैं याते रामचन्द्रजू को अतिही शोभा व्यंजित भई पद २ जहँ नाम जामें तृणमात्रहु लोलत्व नाम चंचलचित्तता नहींहै पद ३ कीर सों नासिका और माथनाम भालजाको बिधुनामचन्द्र सदृशहै पद ४ और जाके धीरत्वनाम धीरताकेसाननें सिंधुथाहमें ह्वैजायहै और त्वंनाम आपकौनहैंकिमहाराजहैं और त्रिलोकी-नाथहैं और पुरुषमें सिंहहैंयहअर्थ अन्तर्गतवर्णनसोंकहै है—और यहीअन्तर्गतरीतिसों—कविको नाम महारा त्रिलोकीनाथसिंहकह्यो १ ॥ २—दोहा(अर्थ सुगम)

इतिश्री धर्म्मशाकद्वीपीय द्विज वंशावतंस श्रीमहा-राजत्रिलोकीनाथसिंहविरचितंभुवनेशभूषणनाम ग्रन्थं समाप्तम् ॥—

भुवनेशभूषण का शुद्धाशुद्ध पत्र ॥

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४	६	यां	यो	,,	१७	जवहां	जवहीं
५	२	सि	सिं	,,	१७	सरसे	सरसै
,,	६	सो	सों	२३	१०	नेननि	नैननि
७	८	छन	छ्यो	,,	१६	जोपे	जोपै
७	२२	छिलि	छिति	,,	२२	बताव	बतावै
११	११	त	ते	२४	१	अखियां	अँखियां
१२	१२	का	को	,,	७	ननिन	नैननि
१३	२२	ला	लो	,,	१८	अखियान	अँखियान
१४	१६	चा	चो	२६	३	दमाके	दमाकें
१६	२२	त्यां	त्यौं	२७	१०	तुम्हो	तुम्हीं
१७	६	सो	सों	,,	२३	हमहो	हमहीं
,,	१५	च	चं	,,	२४	तानति	तानती
,,	२२	र	रै	२८	१	पिछानति	पिछानती
१८	५	सो	सों	,,	२	सानति	सानती
,,	११	व	व	,,	३	जानति	जानती
१९	१४	न	नँ	,,	४	अगोरति	अगोरती
२०	१७	ख	प	,,	५	तोरति	तोरती
,,	२२	हो	हों	,,	७	बोरति	बोरती
२१	११	सुर	शर	,,	८	मरोरति	मरोरती
,,	१३	नैनि	नैननि	,,	१३	सो	सों
,,	१८	गेल	गैल	२९	८	सो	सों
,,	२२	क्यां	क्यों	३२	४	करा	करी
२२	१	कसकै	कसकैं	३२	१८	जा	जो
,,	२	बढ़ी	बढ़ीं	,,	२३	जा	जो
,,	४	कोक	कोक	३३	१	आवैग	आवैगें
,,	६	विचरे	विचरै	३४	२	शप	शेष
,,	८	कुंजंन	कुंजन	,,	१६	स	से
,,	९	भल	भले	३५	१९	खसबोय	खुशबोय
,,	१६	पहुंचां	पहुंचा	,,	,,	सेवतो	सवतो